TDC PART – I HINDI HONS

Part-I Paper -I

हिंदी साहित्य का इतिहास

शे.शं.मि./ई.कं./एस.एम./09

पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता

महाकवि चंदबरदाई लिखित आदिकाल का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का पहला महाकाव्य है, जिसमें पृथ्वीराज चौहान के जीवन-चरित, शौर्य और पराक्रम का ओजपूर्ण वर्णन है | इसके रचयिता चंदबरदाई पृथ्वीराज चौहान के बालपन के मित्र और उनके राजकवि थे | वे उनकी युद्ध-यात्राओं के समय अपनी वीर रस की कविताओं से पृथ्वीराज और उनकी सेना को प्रोत्साहित करते थे और उनका मनोबल बढ़ाते थे | पृथ्वीराज चौहान एक अत्यंत प्रतापी और वीर राजा था | उसने सन् 1165 से 1192 ई. तक राज्य किया | उसका राज्य अजमेर से दिल्ली तक फैला हुआ था |

'पृथ्वीराज रासो' ढाई हजार पृष्ठों का एक बृहत् ग्रन्थ है, जिसमें 69 समय (सर्ग या अध्याय) हैं | प्राचीन समय में प्रचलित प्रायः सभी छंदों का इसमें व्यवहार हुआ है, जिनमें मुख्य हैं – कवित्त (छप्पय) दूहा (दोहा), तोमर, त्रोटक, गाहा और आर्या | कहा जाता है कि 'पृथ्वीराज रासो' काव्य का उत्तरार्ध चंदबरदाई के पुत्र जल्हण के द्वारा पूरा किया गया है | रासो के अनुसार जब मुहम्मद गोरी पृथ्वीराज को कैद करके गजनी ले गया, तब कुछ ही दिनों बाद कवि चंदबरदाई भी अपने परम प्रिय मित्र पृथ्वीराज के पास वहीं चले गए | जाते समय वह अपने पुत्र जल्हण को अपनी कृति को पूर्ण करने का दायित्व सौंप कर गए थे | इसका उल्लेख 'पृथ्वीराज रासो' में मिलता है –

"पुस्तक जल्हण हत्थ दै चलि गज्जन नृपकाज |

पृथिराज सुजस कवि चंद कृत चंदनन्द उद्धरिय तिमि |"

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है –"चंद हिंदी के प्रथम महाकवि माने जाते हैं और उनका 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का प्रथम महाकाव्य है |" महामहोपाध्याय पं.हरप्रसाद शास्त्री के अनुसार चंदबरदाई का जन्म लाहौर में हुआ था | इनके जन्म-काल के सम्बन्ध में कई धारणाएँ हैं | शुक्ल जी ने इनका जन्मवर्ष 1168 ई. माना है तथा लिखा है –"रासो के अनुसार ये भट्ट जाति के जगात नामक गोत्र के थे | इनके पूर्वजों की भूमि पंजाब थी, जहाँ लाहौर में इनका जन्म हुआ था | इनका और महाराज पृथ्वीराज का जन्म एक ही दिन हुआ था और दोनों ने एक ही दिन संसार छोड़ा था |"

'पृथ्वीराज रासो' के चार संस्करण प्रसिद्ध हैं | सबसे बड़ा संस्करण वह है, जिसका प्रकाशन नागरीप्रचारिणी सभा, काशी द्वारा हुआ है तथा जिसकी हस्तलिखित प्रतियाँ उदयपुर के संग्रहालय में सुरक्षित हैं | सभा ने 1585 ई. में लिखित प्रति के आधार पर 'रासो' का सम्पादन कराया था | इस संस्करण में 69 समय (खंड) तथा 16306 छंद हैं | द्वितीय रूप में उपलब्ध 'पृथ्वीराज रासो' 7000 छंदों का काव्य माना जाता है | इसका प्रकाशन नहीं हुआ, किन्तु अबोहर एवं बीकानेर में इसकी प्रतियाँ सुरक्षित हैं, जो सत्रहवीं शताब्दी ई.में लिखी गयीं हैं | तीसरा लघु संस्करण 3500 छंदों का है, जिसमें केवल 19 समय हैं | इस संस्करण की प्रतियाँ भी बीकानेर में सुरक्षित हैं | चौथा संस्करण सबसे छोटा है, जिसमें केवल 1300 छंद हैं | इसी को डॉ. दशरथ शर्मा आदि विद्वान् मूल रासो मानते हैं |

कर्नल टॉड ने इसकी वर्णन-शैली पर मुग्ध होकर इसके लगभग 30 हजार छंदों का अंग्रेजी में अनुवाद कराया था | गार्सा द तासी भी इसकी प्रामाणिकता में संदेह नहीं करते थे | बंगाल की रॉयल एशिया सोसाइटी ने इसका मुद्रण भी आरम्भ कराया था |

पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता का प्रश्न

इन चारों संस्करणों को देखकर यह प्रश्न सहज रूप में उत्पन्न होता है कि इनमें से प्रामाणिक संस्करण कौन-सा है ? और इसी के साथ 'पृथ्वीराज रासो' को अप्रमाणिक मानने का विवाद भी बढ़ जाता है | हिंदी-साहित्य के इतिहास में यह ग्रन्थ इस दृष्टि से सर्वाधिक विवादास्पद रहा है | इस सन्दर्भ में विद्वानों के कई वर्ग बन गए हैं |

प्रथम वर्ग, रासो को सर्वथा अप्रामाणिक मानता है | यह वर्ग चंद के अस्तित्व को तथा रासो को पृथ्वीराज की समकालीन रचना भी नहीं मानता | इस पक्ष के समर्थक हैं, कविराज श्यामलदास, कविराज मुरारीदान, गौरीशंकर हीराचंद ओझा, डॉ.वूलर, मारिसन, मुंशी देवी प्रसाद, श्री अमृतलाल शील, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा डॉ. रामकुमार वर्मा |

द्वितीय वर्ग, यह वर्ग रासो के वर्तमान रूप को प्रामाणिक तथा चन्द को पृथ्वीराज का समकालीन मानता है | इस पक्ष के समर्थक हैं – श्यामसुंदर दास, मथुराप्रसाद दीक्षित. मोहनलाल विष्णुलाल पांड्या, मिश्रबन्धु तथा मोतीलाल मेनारिया | इनका मानना है कि रासो में बड़ी संख्या में प्रक्षिप्त अंश अवश्य है किन्तु यह ग्रन्थ प्रामाणिक है |

तृतीय वर्ग, यह मानता है कि पृथ्वीराज के दरबार में चंद नामक कवि था, जिसने रासो लिखा था किन्तु वह मूल रूप में अप्राप्य है | आज उसका परिवर्तित एवं विकृत रूप उपलब्ध होता है | इस पक्ष के समर्थकों में डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, मुनि जिनविजय, अगरचंद नाहटा, डॉ. दशरथ शर्मा, कविराज मोहन सिंह और डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी | इन विद्वानों ने रासो को अर्द्ध प्रामाणिक रचना स्वीकार किया है |

विद्वानों का एक चतुर्थ वर्ग भी है, जो मानता है कि चंद पृथ्वीराज का समकालीन था परन्तु उसने रासो की रचना नहीं की | इस वर्ग में नरोत्तम स्वामी हैं | उनका मानना है कि जैन ग्रन्थ माला में प्राप्त पद चंद की फुटकर रचनाएँ हैं |

रासो को अप्रामाणिक मानने के मुख्यतः तीन कारण हैं –(क) घटना वैषम्य (ख) काल वैषम्य (ग) भाषा संबंधी अव्यवस्था |

घटना-वैषम्य

1.जो लोग रासो को अप्रामाणिक मानते हैं उनका तर्क है कि 'रासो' में उल्लिखित घटनाएँ और नाम इतिहास से मेल नहीं खाते | इसमें परमार, चालुक्य और चौहान क्षत्रियों को अग्निवंशी माना गया है, जबकि वे सूर्यवंशी प्रमाणित हुए हैं |

2.पृथ्वीराज से जुड़ी दिल्ली की घटनाएँ, संयोगिता-स्वयंवर आदि घटनाएँ इतिहास से मेल नहीं खातीं | इतिहास के अनुसार अनंगपाल उस समय दिल्ली का राजा नहीं था और न पृथ्वीराज को उसने गोद लिया था | पृथ्वीराज अजमेर का शासक था न कि दिल्ली का | बीसलदेव पहले से ही दिल्ली राज्य को अजमेर राज्य में सम्मिलित कर चुके थे |

3.पृथ्वीराज की माँ का नाम कर्पूर देवी था, न कि कमला;जैसा कि रासो में वर्णित है |

4.शहाबुद्दीन की मृत्यु सम्बन्धी इतिवृत्त भी कोरी कल्पना पर आधारित है | क्योंकि गोरी की मृत्यु पृथ्वीराज के हाथों नहीं, गख्खरों के हाथों हुई थी |

5.रासो में पृथ्वीराज के 11 वर्ष से लेकर 36 वर्ष की आयु तक 14 विवाहों का उल्लेख है जबकि इतिहास के अनुसार पृथ्वीराज की मृत्यु तीस वर्ष की अवस्था से पूर्व ही हो गयी थी| अतः इतने विवाह असंभाव्य हैं |

काल-वैषम्य

1.रासो में दी गयी तिथियाँ तथा संवत् भी अशुद्ध हैं | कर्नल टाड के अनुसार रासो में दिए गए संवतों तथा दूसरे ऐतिहासिक संवतों में सौ वर्षों का अंतर है |

2.रासो में पृथ्वीराज की मृत्यु का संवत् 1158 है जबकि इतिहास में वह संवत् 1148 है | पृथ्वीराज का जन्म रासो में सं. 1115 है | इतिहास में वह 1220 ठहरता है |

3.आबू पर भीम चालुक्य का आक्रमण, शहाबुद्दीन के साथ पुराडोर युद्ध की तिथियाँ भी अशुद्ध हैं |

4.रासो के अनुसार शहाबुद्दीन गोरी सं.1249 में पृथ्वीराज द्वारा मारा गया था किन्तु इतिहास के अनुसार सं. 1263 में गख्खरों द्वारा उसका वध किया गया था |

उक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि रासो एक अप्रामाणिक ग्रन्थ है | यदि चंदबरदाई पृथ्वीराज के समकालीन होते और रासो उनकी मौलिक कृति होती तो कदाचित् इतनी भयंकर भूलें न होतीं | इस विषय में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं – "इस सम्बन्ध में इसके अतिरिक्त और कुछ कहने को जगह नहीं कि यह ग्रन्थ पूरा जाली है | यह हो सकता

है कि इसमें इधर-उधर चंद के कुछ पद्य भी बिखरे हुए हों | पर उनका पता लगाना असंभव है | यह यदि किसी समसामयिक कवि का रचा होता और इसमें कुछ थोड़े अंश ही पीछे से मिले होते तो कुछ घटनाएँ और कुछ संवत् तो ठीक होते |"

भाषा-सम्बन्धी अव्यवस्था

रासो में अरबी-फ़ारसी के बहुत से शब्दों का प्रयोग हुआ है, जो चंद के समय में किसी भी प्रकार प्रयोग में नहीं लाये जा सकते थे | इस प्रकार चंद की भाषा चंद के समय की न होकर सोलहवीं शताब्दी की ठहरती है | प्रसिद्ध भाषा शास्त्री डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने इसी आधार पर इसे सोलहवीं शती की रचना माना है |

रासो को प्रामाणिक मानने वालों का तर्क

रासो पूर्णतया अप्रामाणिक ग्रन्थ नहीं है | इसमें बहुत कुछ प्रक्षेप होने के कारण इसका रूप विकृत अवश्य हो गया है, पर इस विशाल ग्रन्थ में कुछ सार भी अवश्य है | इसका मूल रूप निश्चित ही साहित्य और भाषा के अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है | मुनि जिनविजय का कहना है कि रासो का मूल रूप अल्पकाय था और उसकी भाषा अपभ्रंश थी| एस.के.चटर्जी का भी ऐसा ही विश्वास है | डॉ.हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत है "इन पद्यों के प्रकाशन के बाद अब इस विषय में किसी को भी संदेह नहीं रह गया है कि चंद नामक कवि पृथ्वीराज के दरबार में अवश्य थे और उन्होंने ग्रन्थ भी लिखा है | सौभाग्य रासो में भी ये छंद कुछ विकृत रूप में प्राप्त हो गए हैं | इस पर यह अनुमान किया जा सकता है कि वर्तमान रासो में चंद के मूल छंद अवश्य मिले हुए हैं |"

डॉ. नगेन्द्र संपादित इतिहास पुस्तक में डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' ने लिखा है – "वस्तुतः विद्वानों ने बाल की खाल खींचने की चेष्टा में अनेक ऐसे तर्क प्रस्तुत किये हैं, जो इस काव्य की प्रामाणिकता के लिए उचित कसौटी नहीं बन सकते | 'पृथ्वीराज रासो' ही नहीं 'रामचरितमानस', 'सूरसागर', 'बीजक' आदि अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों पर यदि अनेक प्रकार के तर्क दिए जाएँ तो उनकी प्रामाणिकता भी किसी न किसी सीमा तक संदेह का विषय बन सकती है | इतिहास विरोधी कथनों के आधार पर 'पृथ्वीराज रासो' को

अप्रामाणिक मानना उचित नहीं है | चंद ने पृथ्वीराज के जीवन का जैसा सजीव वर्णन किया है, उसे देखकर यही कहा जा सकता है कि वह पृथ्वीराज का समकालीन था | अतः रासो को अप्रामाणिक मानना उचित नहीं है |

डॉ.दशरथ शर्मा ने रासो पर आरोपित शंकाओं का खण्डन करते हुए कहा है –

1.मूल रासो न तो जाली ग्रन्थ है और न उसकी रचना सं. सोलह सौ के आस पास हुई है | इधर मिली हुई रासो की लघुतम प्रतियों के आधार पर घटना-वैषम्य, काल-वैषम्य एवं भाषा सम्बन्धी अव्यवस्थाओं का निराकरण हो जाता है | इन प्रतियों में इतिहास विषयक त्रुटिपूर्ण घटनाओं का कहीं भी उल्लेख नहीं है |

2.राजपूत कुलों की आबू के अग्निकुंड से उत्पत्ति का उल्लेख भी इस प्रति में नहीं है |

3.संयोगिता-स्वयंवर का वर्णन सभी प्रतियों में विस्तारपूर्वक है |

4. लघुतम प्रति में कैमास वध का वर्णन है | 'पृथ्वीराज विजय' के अनुसार वह पृथ्वीराज का प्रधान था | वह मूल रासो की कथा है |

डॉ. दशरथ शर्मा का कहना है "सारांश यह कि अपने मूल रूप में रासो की ऐतिहासिकता अक्षुण्ण है |" रासो की भाषा सम्बन्धी शंकाओं का समाधान करते हुए रासो की प्रामाणिकता के समर्थकों का कहना कि उस समय मुसलामानों के आक्रमण आरम्भ हो गये थे | अतः लाहौर का निवासी होने के कारण चंद की भाषा में उन शब्दों का प्रयोग उचित और तर्कसंगत है | यदि अरबी-फ़ारसी के शब्दों के आधार पर रासो अप्रामाणिक है तो सूर और तुलसी का काव्य भी अप्रामाणिक मानना पड़ेगा क्योंकि उसमें भी उर्दू और फ़ारसी के शब्द मिलते हैं |

'पृथ्वीराज रासो' जैसे एक श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण ग्रन्थ को अप्रामाणिक मानने वाले तर्क उसकी महानता और श्रेष्ठता को नज़रन्दाज करते हैं | पृथ्वीराज जैसा महान योद्धा जो मुगलों के विरुद्ध चुनौती बनकर खड़ा हुआ तथा भारतीय इतिहास और संस्कृति में जिसे युगपुरुष के रूप में मान्यता प्राप्त हुई और जिसे षड्यंत्र से मारा गया क्योंकि उसे सीधे युद्ध में पराजित

करना आसान नहीं था | ऐसे महान योद्धा की शौर्यगाथा को वर्णित करने वाले ग्रन्थ को अप्रामाणिक मानना एक बहुत बड़े षड्यंत्र का हिस्सा भी हो सकता है,जो मुग़लकाल से ही रचा जा रहा था और जिसमें हमारे तथाकथित विद्वान् भी फँसते चले गये |

सच तो यह है कि चंदबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' एक महान ग्रन्थ है, जिसमें अनेक घटनाओं का समावेश है | इसमें वस्तु-वर्णन का आधिक्य है | कवि ने बड़ी तन्मयता के साथ नगरों, वनों, सरोवरों, किलों आदि का वर्णन किया है | युद्ध-क्षेत्र के दृश्य तो कवि की अद्भुत प्रतिभा का परिचय देते हैं | कवि ने समय और क्रिया को एक साथ बिम्बों में बाँध कर रंग और ध्वनियों को भी रूपायित कर दिया है | वस्तुतः यह काव्य पिंगल शैली में लिखा गया है, जो ब्रजभाषा का वह रूप है, जिसमें राजस्थानी बोलियों का मिश्रण है |

यह महाकाव्य सभी दृष्टियों से आदिकाल की एक श्रेष्ठ कृति सिद्ध होता है |